शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक २६ : नई दिल्ली : २३-२६ अक्टूबर २०११

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ४६ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ४७, सर्व ६६ सानंद केलवा विराज रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यप्रवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। १० नवम्बर को चतुर्मास की समाप्ति के अगले दिन पूज्य आचार्यप्रवर केलवा से विहार कर देंगे। १५ जनवरी को मर्यादा महोत्सव हेतु आमेट पधार जाएंगे। आगामी यात्रा पथ पूर्व में प्रकाशित हो चुका है।

संस्मरणों का वातायन : आचार्यश्री तुलसी

दीर्घकालीन प्रवास के बाद जैविभा से प्रस्थान (८७६)

"जैनविश्वभारती, लाडनूं से हमारे प्रस्थान का समय बिल्कुल सामने है। साधु-साध्वियां विहार के लिए सन्नद्ध हैं। प्रातिहारिक उपकरण पुनः गृहस्थों को संभलाए जा चुके हैं, संभलाए जा रहे हैं। यहां का प्रवास बहुत अच्छा रहा, कार्यकारी रहा। जैविभा के अधिकारियों की प्रबल भावना है कि हम एक बार परिसर में भ्रमण करें, यहां की गतिविधियों का अवलोकन करें और कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन दें। हमारी भी इच्छा हो गई कि हम विहार से पहले जैनविश्वभारती का निरीक्षण करें। इस विषय में चिन्तन किया, चिन्तन निर्णय में परिणत हुआ और हमने निर्धारित समय पर जैविभा के परिसर में परिभ्रमण करने की स्वीकृति प्रदान कर दी।

२७ मार्च १६६७, गुरुवार। विश्वविद्यालय के कुलपति और प्रोफेसरों के लिए परिसर में कुछ विशेष भवन बने हैं। आज हमने वहां जाकर भवनों को देखा। विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति मोहनसिंहजी भंडारी और वर्तमान कुलपति भोपालचन्दजी लोढ़ा दोनों मौजूद थे। उन्होंने सारे भवन दिखलाए। लगता है कि यह एक कॉलोनी जैसी बन गई है। सुन्दर स्थल है। सामने साध्वी मालूजी (टमकोर) का समाधि-स्थल है।

यह सब देखकर हम 'आरोग्यम्' गए। यह आयुर्वेद का भवन है, सेवाभावी कल्याणकेन्द्र का भवन है। हनुमानमलजी बैंगानी (लाडनूं) की ओर से इसका निर्माण करवाया गया। आज इस भवन का उद्घाटन हुआ। हनुमानमलजी की धर्मपत्नी सूरज बहन ने फीता काटा। हमने मंगलपाठ सुनाया। विश्वभारती परिवार के प्रायः सभी लोग वहां उपस्थित थे। बाद में सब लोग 'भिक्षुविहार' में आ गए। वहां एक प्रोग्राम हो गया।

सुधर्मा सभा में आज महाश्रमणी ने प्रवचन सम्पन्न किया। जब से महाप्रज्ञजी को विहार कराया और हम यहां रहे, तब से प्रातःकालीन प्रवचन का काम महाश्रमणी कनकप्रभा को सौंपा गया। इसके पीछे चिन्तन यह रहा कि मैंने आचार्य पद का विसर्जन कर दिया है इसलिए अब नियमित प्रवचन नहीं करना है। साध्वीप्रमुखा का अनुरोध रहा कि प्रवचन यहां नहीं, ऋषभद्वार (तेरापंथ भवन) में हो सकता है। मैंने इस अनुरोध को अस्वीकार करते हुए कहा 'प्रवचन यहीं करना है।' साध्वीप्रमुखा ने मेरे आदेश को शिरोधार्य किया और प्रवचन किया। मुझे प्रसन्नता है कि इन्होंने बहुत अच्छी तरह प्रभावपूर्ण तरीके से प्रवचन किया। श्रोता मंत्रमुग्ध थे। हमको याद नहीं करते, यही सफलता की सूचना है। पट्ट पर विराजमान होकर प्रवचन करने का यह पहला ही अवसर होगा। इन्होंने बहुत अच्छे ढंग से दायित्व का निर्वाह किया। आगे यात्रा में भी प्रवचन का यही क्रम रहेगा। साध्वी स्वर्णरेखा भी तीन महीनों से बराबर उपदेश दे रही है। यह अच्छा क्रम बन गया।

२८ मार्च, शुक्रवार। आज प्रातःकाल हम जैनविश्वभारती में घूमे, साधन के साथ घूमे। मौसम बहुत ठंडा था। आनन्द से गमनयोग किया। परिसर बड़ा हृदयहारी/मनोहारी लग रहा है। यहां का वातावरण शान्त है। इस बार यहां हमारा सर्वाधिक लम्बा प्रवास रहा। सायंकाल विहार कर लाडनूं शहर में जाना है। रात्रिकालीन प्रवास तेरापंथ भवन में करना है।

आज प्रवचन के समय 'मगल भावना' का कार्यक्रम रखा गया। हम सपरिवार सुधर्मा सभा में उपस्थित हुए। वृद्ध साध्वियों ने गीत गाया। समणीवृन्द, मुमुक्षु बहनों और कन्यामंडल की प्रस्तुतियां हुईं। अनेक भाई-बहनों के विचार सुने। विश्वविद्यालय के पूर्व और वर्तमान दोनों कुलपति बोले। नए कुलपति लोढाजी ने कहा 'मुझ पर नया दायित्व आया है। इसलिए अभी मुझे आपकी यहां अत्यधिक आवश्यकता है। आप मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। मैं स्वयं वैसा मनुष्य बनूं और टीम स्प्रिट से काम करूं, ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें।'

आगमवाणी से प्रवचन का प्रारंभ करते हुए मैंने कहा 'जागरवेरोवरए वीरे वीर कौन होता है? जो सदा जागरूक रहता है, अपने करणीय को भूलता नहीं है तथा वैर भाव से उपरत होता है, वह वीर है। अपेक्षा है कि हम सब वीर बनने का प्रयत्न करें।'

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए मैंने कहा 'आज प्रातः मैंने जैनविश्वभारती का भ्रमण किया। चारों ओर देखा। विश्वभारती सदा मेरी स्मृति में रहेगी, चाहे मैं कहीं भी रहूं। यू.जी.सी. की टीम आई थी। टीम के प्रतिनिधियों को यहां का वातावरण बहुत अच्छा लगा। लाडनूं क्षेत्र महाविदेह की तरह है। यहां कभी विरहकाल नहीं रहता है। हमारे साधु-साध्वियां, समणियां और मुमुक्षु बहनें यहां रहती हैं। मैं चाहता हूं कि ये सब चिन्तनपूर्वक ठोस कार्य करें। कम-से-कम एक सौ युवतियां 'तेरापंथ-प्रबोध' और 'श्रावक-सम्बोध' कंठस्थ करें। इनका भावपूर्ण संगान करें। दोनों ग्रन्थों को अच्छी तरह समझकर औरों को भी समझाने का प्रयत्न करें। दूसरी बात अणुव्रत का कार्य श्लथ नहीं होना चाहिए। सब कार्यकर्ता पूरी निष्ठा से इस काम को करें। तीसरी बात लाडनूं को मेरी जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। इसलिए यह क्षेत्र मद्य और आमिष से मुक्त बने। डंडे के बल पर नहीं जोर-दबाव से नहीं, किन्तु अहिंसा व मानवीय दृष्टि से यह काम हो। निराशा की जरूरत नहीं है। हम सब मिलकर प्रयत्न करें।'

प्रवचन के उपसंहार में मैंने कहा 'परसों मैं सचिवालय गया। वहां नियमित रूप से प्रार्थना का क्रम अच्छे रूप में चल रहा है। कर्मचारी से लेकर अधिकारी तक यथासंभव उपस्थित होते हैं। यह बहुत अच्छा क्रम है। इस बार विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों के साथ हमारा निकट का सम्पर्क रहा। प्रतिदिन लगभग दो घंटे उनके साथ बिताए। यहां के कर्मचारियों और कार्यकर्ताओं से भी कहना चाहूंगा कि वे सब व्यसनमुक्त बनें। मैं दूर बैठा भी कभी नहीं सुनना चाहता कि विश्वभारती में ऐसा काम हो रहा है। लाडनूं के लोगों ने अच्छे ढंग से अपना दायित्व संभाला। यहां हमारी वृद्ध साध्वियां रहती हैं। वे सब भली-चंगी हैं, अच्छी हैं। सब समाधिमय और निश्चिन्तता का जीवन जी रही हैं, यह प्रसन्नता की बात है। अब इस प्रसन्नमाला में मैं सबसे खमतखामणा करता हूं। सब सजगता से अपने दायित्व का निर्वहन करें, यही मेरी मंगलकामना है।'

आज साध्वी यशोधराजी हैदराबाद से चलकर लाडनूं पहुंची हैं। ठीक सात वर्ष पूरे करके आई हैं। योगक्षेम वर्ष की सम्पन्नता के बाद कई सिंघाड़ों ने सुदूर यात्रा के लिए प्रस्थान किया था। उनमें से प्रायः सिंघाड़े लौट आए हैं। एक मात्र साध्वी राजीमतीजी के सिंघाड़े को अभी यह अवसर उपलब्ध नहीं हो पाया है। इस बार सुदूर प्रदेशों की यात्रा सम्पन्न कर दो सिंघाड़े आए। साध्वी जतनकुमारीजी (कनिष्ठा) ने पूना चातुर्मास कर हेम दीक्षा द्विशताब्दी के मौके पर दर्शन कर लिए। साध्वी यशोधराजी को आज यह अवसर मिल गया। अच्छा उत्साह दिखाई दे रहा है। ऊपर से मेघाच्छन्न आकाश भी नई छटा दिखा रहा है।

आज लम्बे समय के बाद हमारे लिए नया दिवस आया है। अब हम यहां से विहार कर रहे हैं। मेरा स्वास्थ्य जैसा भी है, ठीक है। उतार-चढ़ाव तो आता ही रहा है, आता रहेगा। पर मेरा मन अब भी वैसा ही प्रसन्न है, जैसा रहता है।

१. इस बार यहां लाडनूं में हम नए सन्दर्भ में रहे। महाप्रज्ञजी का नए तरीके से रहना हुआ। शासन की बड़ी प्रभावना रही।
२. मेरा यह कदम अब सबकी समझ में आ गया। अच्छा हुआ, अच्छे के लिए हुआ।
३. लाडनूं विश्वभारती संस्थान फलेगा-फूलेगा। जब हम अगली बार आएंगे तो बहुत अच्छे रूप में देखेंगे।

सायंकाल छह बजे हमने जैनविश्वभारती से विहार किया। चौथी पट्टी के गेट से चलकर पहली पट्टी में स्थित तेरापंथ भवन (ऋषभद्वार) में पहुंचे। आसपास के सारे रास्ते जनाकीर्ण हो गए। जैनविश्वभारती की स्थापना से पहले लाडनूं में हमारा प्रवास प्रायः मूल ठिकाने (सेवाकेन्द्र) में होता था। उस समय पहली पट्टी में जैसी चहलपहल रहती थी, कुछ-कुछ वैसा ही दृश्य उपस्थित हो गया। अर्हत्-वन्दना के बाद शहर के लोगों को विशेष रूप से उपासना का अवसर मिला। रात्रि में आंधी-पानी ने अपना रूप दिखाया। सुबह तक मौसम साफ हो गया। विहार में व्यवधान नहीं हुआ।

२६ मार्च, शनिवार। प्रातः सूर्योदय के बाद कुछ क्षणों के लिए सेवाकेन्द्र की साध्वियों को उपासना का अवसर देकर हमने उनसे विदा ली और जसवन्तगढ़ के लिए विहार कर दिया। लाडनूं की सीमा पार करते ही एक छोटा-सा गांव है आसोटा। अणुव्रत गांव के रूप में स्वीकृत आसोटा गांव के लोग सामूहिक रूप में खड़े हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। थोड़ी देर हम वहां ठहरे। गांव में चल रहे अणुव्रत कार्य की जानकारी प्राप्त की। लोगों को अणुव्रत के सन्दर्भ में कुछ बातें बताईं। वहां से आगे चले। एक और छोटे-से गांव पदमपुरा के लोग खड़े थे। गांववासियों की भावना देखकर वहां भी प्रवचन किया, नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी।

मार्गवर्ती गांवों के लोगों को धर्मोपदेश सुनाकर आगे बढ़े, जसवन्तगढ़ में प्रवेश किया, वहां सेवाभावी कल्याणकेन्द्र में सेवा देनेवाले वैद्य तिलोकचन्दजी शर्मा का मकान था। वैद्यजी के भावपूर्ण अनुरोध पर उनके मकान में गए। कुछ समय वहां रुके। वैद्यजी के परिजनों और आसपास रहनेवाले लोगों की सभा जुड़ गई। उपस्थित लोगों को नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा दी।

जसवन्तगढ़ में हमारा प्रवास बगड़िया धर्मशाला में हुआ। हम धर्मशाला में पहुंचे, तब तक दस बज चुके थे। लाडनूं और सुजानगढ़ के लोग तो वहां उपस्थित थे ही, चाड़वास, छापर और बीदासर के लोग भी बड़ी संख्या में आ गए। हजारों लोगों के सम्मिलन से गांव में मेला-सा लग गया। स्थानीय लोग भी बहुत प्रसन्न थे। दिनभर सत्संग चलता रहा। स्थानीय और आगन्तुक सभी लोग लाभान्वित हुए।

३० मार्च, रविवार। आज हम सुजानगढ़ पहुंचे। सुजानगढ़ और लाडनूं दोनों क्षेत्रों के लोग उपस्थित थे। स्वागत का कार्यक्रम चला। श्रीचन्दजी रामपुरिया आदि कई व्यक्ति बोले। स्वागत के उत्तर में मैंने कहा 'जैनविश्वभारती, लाडनूं में दो वर्ष प्रवास करके आज मैं सुजानगढ़ आया हूं। लाडनूं में इतना लम्बा प्रवास किया, पर जयाचार्य से कम रहा हूं। एकान्त और स्वास्थ्य की अनुकूलता के साथ वहां साधना और ज्ञानाराधना का भी अच्छा क्रम चला। मैं श्रावक-श्राविकाओं से भी कहना चाहता हूं कि वे ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र के महत्त्व को समझें तथा अपने दृष्टिकोण को यथार्थ व व्यापक बनाएं। जैन विद्वान अच्छी संख्या में तैयार हों, यह आज की सबसे बड़ी अपेक्षा है। श्रावक-सम्बोध श्रावकाचार का एक अच्छा ग्रन्थ है। इसे कंठस्थ करने का प्रयत्न किया जाए।'

सुजानगढ़ में हम तीन दिन रहे। १ अप्रैल को मौन दिवस था। पिछले डेढ़ वर्ष से १ और १६ तारीख को दिन-रात मौन रहता है। मौन के दिन लगभग समय ध्यान, स्वाध्याय और कायोत्सर्ग में बीतता है। सुबह-सुबह दर्शन करने के बाद लोगों को उपासना का अवसर भी नहीं मिलता। यह प्रयोग प्रायः ठीक चल रहा है। कभी कोई विशेष कठिनाई नहीं आई। पर सुजानगढ़-प्रवास में बाहर से लोगों के अधिक आवागमन तथा वहां प्रवासी सन्तों की भावना देखकर थोड़ी-सी दुविधा का अनुभव हुआ। आखिर एक प्रसंग तो ऐसा आ गया कि संघीय दृष्टि से विशेष स्थितिवश मौन खोलना पड़ा।

सुजानगढ़ में मुनि दुलीचन्दजी 'दिनकर' स्थिरवासी हैं। वय अठासी वर्ष है। वय में सबसे बड़े हैं। विनीत हैं। भक्त हैं। एकरंग हैं। समर्पित हैं। इनके पास बाल-बंधव मुनि पान सेवाभावी साधु है। दिनकरजी के लिए आलम्बनभूत है। यहां और भी कई साधु हैं। मुनि दिनकरजी स्वाध्याय खूब करते हैं। संगीत के बड़े प्रेमी हैं। तुलसी-पाठशाला के प्रथम छात्रों में हैं।

मुनि दिनकरजी ने अपनी भावना प्रस्तुत करते हुए कहा 'गुरुदेव! मैं सतरह वर्ष की अवस्था में संघ में आया था। आज अठासीवां वर्ष चल रहा है। इस सुदीर्घ संयम यात्रा में जिस समाधि और आनन्द का अनुभव हुआ और हो रहा है, वह सब आपके प्रताप से है। आपकी कृपादृष्टि मुझ पर सदा रही है। समय-समय आपने अपनी सेवा का दुर्लभ अवसर प्रदान कर मुझे कृतार्थ किया है। मैं किन शब्दों में आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करूं? गुरुदेव! आप मुझे ऐसी ही समाधि प्रदान करते रहें। आप चिरायु हों, दीर्घायु हों, मेरी यही मंगलकामना है।'

२ अप्रैल, बुधवार। आज सुजानगढ़ से प्रस्थान कर हम 'कोठारी कुंज' पहुंचे। वहां लाडनूं, सुजानगढ़, छापर, चाड़वास, बीदासर, राजलदेसर, श्रीडूंगरगढ़ आदि क्षेत्रों के इतने लोग आ गए कि 'कोठारी कुंज' छोटा हो गया। इस समय प्राइवेट बसों की हड़ताल चल रही है। पर श्रद्धा और उत्साह के सामने इस बाधा का कोई असर दिखाई नहीं दिया।

'कोठारी कुंज' पहुंचने के कुछ ही समय बाद मैंने देखा कि लोग इधर-उधर घूम रहे हैं। यों ही समय जाया करना मुझे पसन्द नहीं आया। मैंने साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं की समवेत सभा आमंत्रित की। सभा के व्यवस्थित होने पर श्रावक समाज को सम्बोधित कर मैंने कहा 'उपासना के इन दुर्लभ क्षणों को पिकनिक का

रूप न दिया जाए। मैं चाहता हूं कि ज्ञान, ध्यान, जप व स्वाध्याय में से किसी एक का आलम्बन लेकर समय को सार्थक किया जाए। अभी हमारे पास समय है। इस समय का उपयोग करने के लिए तेरापंथ-प्रबोध का लयबद्ध संगान हो। इससे प्रेरणा तो मिलेगी ही, एकाग्रता भी बनी रहेगी।'

समझदार को इशारा काफी इस कहावत के अनुसार कुछ ही क्षणों में तेरापंथ-प्रबोध का संगान शुरू हो गया। इस उपक्रम में साधु-साध्वियों, समणियों और श्रावक-श्राविकाओं की सामूहिक संभागिता रही। पर संगान की प्रक्रिया को आकर्षक और व्यवस्थित बनाने के लिए एक बार एक पद्य के उच्चारण का प्रारंभ साधुओं की ओर से किया गया और एक बार साध्वियों ने किया। लगभग एक घंटे तक तन्मयता के साथ सबने संगान किया। सबको अच्छा लगा।

३ अप्रैल, गुरुवार। आज हम छापर पहुंचे। 'कालू कल्याण केन्द्र' में प्रवास हुआ। उत्साहपूर्ण वातावरण में कार्यक्रम चला। छापर की वयोवृद्ध महिलाओं ने वहां हमारे चातुर्मास के लिए प्रार्थना की। मैंने अपने प्रवचन में कहा 'अष्टमाचार्य पूज्य गुरुदेव कालूगणी की जन्मभूमि में हम दो दिन के लिए आए हैं। इतने कम समय के लिए आना हमें भी कैसा-कैसा ही लग रहा है। पर इस बार का सारा कार्यक्रम पूर्व निर्णीत है। इसलिए जिसे जितना समय मिल रहा है, उसी का भरपूर उपयोग किया जाए। हमारे पास अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवनविज्ञान जैसे व्यापक और असाम्प्रदायिक कार्यक्रम हैं। चिन्ता का विषय एक ही है कि मनुष्यता को सुरक्षित रखने का सघन प्रयास नहीं हो रहा है।'

छापर में जयपुर से डॉक्टर पोकरणा आए। उदर विशेषज्ञ हैं। इधर में कोष्ठबद्धता की कठिनाई बनी हुई है। डॉक्टर ने जांच की। चिकित्सा बताई। प्रारंभ कर दी गई। डॉक्टर अच्छे हैं, अनुभवी हैं, तेरापंथी हैं। अभी अनोप बोथरा ने यहां आने की प्रेरणा की।

४ अप्रैल, शुक्रवार। मध्यान्ह का समय। श्रावक समाज को उपासना कराने का समय। साधु-साध्वियों को उपस्थित होने का निर्देश दिया। चतुर्विध धर्मसंघ की उपस्थिति में मैंने श्रावक-सम्बोध का संगान शुरू किया। कुछ पद्यों की प्रस्तुति के बाद मैंने महाश्रमणी से कहा कि वह इन पद्यों की संक्षिप्त व्याख्या करे। उसने संकोच का अनुभव किया। पर आदेश का पालन तो होना ही था। बीच-बीच में मैं भी कुछ स्पष्टीकरण करता रहा। लगभग एक घंटे से अधिक समय तक यह क्रम चला। समय इतना जल्दी बीत गया कि पता ही नहीं चला। मैंने बार-बार संगान किया। श्रोताओं ने भावविभोर होकर सुना और समवेत स्वरों में गाने का अभ्यास भी किया।

श्रावक-सम्बोध सीखने की प्रेरणा देते हुए मैंने कहा 'श्रावक-सम्बोध बनाने की प्रेरिका महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा रही है। इन्होंने एक बार कहा 'आपने साधु-साध्वियों के लिए अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया है। किन्तु श्रावक समाज के लिए इस दृष्टि से सलक्ष्य अभी तक कोई ग्रन्थ सामने नहीं आया है।' महाश्रमणीजी का सुझाव हमें पसन्द आया और प्रयत्न प्रारंभ कर दिया। फलस्वरूप श्रावक-सम्बोध कृति सामने आ गई। श्रावक इस कृति को सामने रखकर तदनुरूप बनने का प्रयास करें तो सही मायने में श्रावक बन जाएंगे। वर्तमान युग की त्रासदी यह है कि आदमी को बदलने का प्रयास दंड और कानून के जरिये किये जा रहा है। ऐसे प्रस्ताव पास करनेवाले अधिकारी स्वयं अपराधी बन रहे हैं। यह स्थिति देश के लिए हितकर नहीं है। हम अणुव्रत के माध्यम से अपराध चेतना को मिटाना चाहते हैं। मेरा विश्वास है कि समय, श्रम और शक्ति का सही दिशा में नियोजन होता रहे तो व्यक्ति-व्यक्ति के मानस को बदला जा सकता है।

५ अप्रैल, शनिवार। आज हम छापर से चलकर चाड़वास पहुंचे। जहां अभी-अभी मर्यादा महोत्सव हुआ था। बड़ा रमणीय स्थल बन गया है। गेस्ट हाउस के ऊपर भी मकान बन गया है। हमने ऊपर चढ़कर देखा। बहुत भव्य रूप लगा। चाड़वास में दो दिन रहना है। स्वागत समारोह में श्रावक-श्राविकाओं के मीठे-मीठे उपालम्भ सुने। क्योंकि महोत्सव पर हम यहां नहीं आए थे। महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ, इसकी लोगों को प्रसन्नता भी है। चाड़वास में स्थिरवासी मुनि जंवरीमलजी बोले। महोत्सव के अवसर हमने जो सन्देश दिए थे, उनको प्रिंट करवा कर अच्छी फ्रेमिंग कर दी गई। फ्रेम किए गए दोनों सन्देश भेंट किए गए।

मैंने अपने प्रवचन में कहा 'चाड़वास अब सचमुच चारूवास बन गया है। यहां मर्यादा महोत्सव जैसा व्यापक कार्यक्रम होने से इसकी गणना शहरों की पंक्ति में होने लगी है। यहां के लोगों ने महोत्सव को सफल बनाने में अपनी सूझबूझ और कर्तृत्व का भरपूर उपयोग किया। पहले यह विश्वास नहीं था कि चाड़वास के लोग इस तरह की सुव्यवस्थाएं इतने कौशल से कर पाएंगे। अब इनका मुकाबला भारी पड़ेगा, ऐसा प्रतीत होता है। कुल मिलाकर

चाड़वास का मर्यादा महोत्सव सफल महोत्सव रहा।'

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए मैंने कहा 'जिस समय मर्यादा महोत्सव की घोषणा हुई थी, यहां के लोगों को कल्पना नहीं थी कि मैं नहीं आऊंगा। हमने न आने का निर्णय कर लिया। चाड़वासवासियों को यह निर्णय कैसा-कैसा ही लगा, हमारे साधु-साध्वियों को भी लगा। पर हमारा निर्णय सुचिन्तित था। हमने इसे रहस्य ही बनाए रखा। साधु-साध्वियों ने भी इस सन्दर्भ में जानने की चेष्टा की। पर मैंने कहा इसे रहस्य ही रहने दो। कभी रहस्य खुल जाएगा।' भाइयों! मैं यहां आ जाता तो ये कीमती सन्देश आपको कैसे मिलते। ये सन्देश आपके लिए अमूल्य निधि बन गए हैं। आपने भी इन्हें सुन्दर ढंग से प्रकाशित कर ऐतिहासिकता दी है।'

प्रवचन का उपसंहार करते हुए मैंने कहा 'मैंने पद का विसर्जन किया, वह नाम मात्र का विसर्जन नहीं किया। विसर्जन सही मोन में विसर्जन बने, इसका यह प्रयत्न था। तेरापंथ धर्मसंघ महान धर्मसंघ है। लाखों-लाखों श्रावक-श्राविकाएं और सैकड़ों-सैकड़ों साधु-साध्वियां हैं। इन्हें नेतृत्व देना बहुत बड़ी बात है। हमारे पट्टधर शिष्य महाप्रज्ञजी ने इस माने में अच्छा कार्य किया, यह मेरे लिए प्रसन्नता की बात है। चाड़वासवासी चाहते थे कि मैं यहां आऊं, उनकी भावना आज साकार हो गई है।"

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण केलवा में

अहिंसा प्रशिक्षक अधिवेशन

११ अक्टूबर। अणुव्रत अनुशास्ता पूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में छहदिवसीय अहिंसा प्रशिक्षक अधिवेशन का आज शुभारंभ हुआ। राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान द्वारा आयोजित इस अधिवेशन का प्रारंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। अणुव्रत प्रभारी शासनश्री मुनि सुखलालजी ने अहिंसा प्रशिक्षण के संदर्भ में अपने विचार रखे। अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान के संयोजक श्री भीखमचन्द नखत, डॉ हीरालालजी श्रीमाली, सहसंयोजक श्री धर्मचन्द जैन 'अनजाना', श्री साधुशरण 'सुमन' ने अपने वक्तव्य में संस्थान की विभिन्न प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला। कवि श्री अब्दुल जब्बार ने अहिंसा के संदर्भ में काव्यपाठ करते हुए अपनी कृति 'अहिंसा के उजाले' पूज्यवर को भेंट की। सुजानगढ में शासनगौरव साध्वी राजीमतीजी एवं श्रीगंगानगर में साध्वी चंदनबालाजी की प्रेरणा से भरे गए नशामुक्ति के संकल्प पत्र पूज्यप्रवर को भेंट किए गए। मुनि अनंतकुमारजी ने अपने १३वें दीक्षा दिवस के संदर्भ में पूज्यप्रवर के मंगल आशीर्वाद की कामना की।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी शक्ति का समग्रता से नियोजन किया और अणुव्रत के कार्य को गति प्रदान की। आज कई क्षेत्रों में अहिंसा प्रशिक्षण के उपक्रम चल रहे हैं। यह अणुव्रत का ही कार्य है। इसके संचालन में कार्यरत अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान स्वतंत्र केन्द्रीय संस्था के रूप में स्वीकृत हो चुका है। कुछ लोगों ने तो स्वयं को इस कार्य के लिए काफी समर्पित कर रखा है। संस्थान से जुड़े शिक्षक अपनी बुद्धि व ज्ञान के आधार पर समस्याओं को समाहित करें।' आचार्यवर ने विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे नशामुक्ति अभियान की सराहना की।

आचार्यवर ने तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान में लगभग सात सौ साधु-साध्वियों में मंत्री मुनिश्री को तीन दीक्षा देने वाले एकमात्र मुनि बताते हुए कहा--'आपके हाथ से मेरी दीक्षा हुई, मुनि उदितकुमारजी की दीक्षा हुई और आज से बारह वर्ष पूर्व मुनि अनंतकुमारजी की दीक्षा हुई। जैसा मैंने देखा, मुनि अनंतकुमारजी वैरागी, आचारनिष्ठ, सेवाभावी और अच्छे संत हैं। हमारा सान्निध्य तो है ही, साथ में मंत्री मुनिश्री का निकट सान्निध्य मिलना सौभाग्य की बात है। मुनिश्री की सन्निधि का लाभ उठाते हुए इनकी ज्ञान साधना चलती रहे। ये सेवा करते रहें और अपना खूब अच्छा विकास करें। इन्होंने अगले वर्ष इस दिन तक उत्तराध्ययन सीखने का संकल्प व्यक्त किया है। उत्तराध्ययन जैसा पवित्र शास्त्र मुखस्थ, कंठस्थ और मस्तिष्कस्थ रहे, इससे मुख, कंठ और मस्तिष्क भी पवित्र होते हैं।' कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

स्वार्थ को छोड़ सर्वार्थ सोचें

१२ अक्टूबर। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि के पंचम अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अध्यात्म जगत का एक महत्वपूर्ण शब्द है--भेदविज्ञान, अर्थात आत्मा और शरीर

की भिन्नता की अनुभूति। जिसे भेदविज्ञान की प्राप्ति हो जाती है, उसके लिए मोह को छोड़ना आसान हो जाता है। केवल शरीर के प्रति ही नहीं, पदार्थों के प्रति भी व्यक्ति के मन में मूर्च्छा का भाव हो सकता है। किन्तु वह आकर्षण साधक को अपने लक्ष्य से दूर ले जानेवाला होता है। संसार में मोह से पूर्णतया मुक्त हो पाना कठिन है। लेकिन यह मोह विकृत न हो तो कर्मबंध से काफी बचाव हो सकता है। साधक का लगाव ऐसे व्यक्ति के प्रति हो, जो कल्याण की दिशा में अग्रसर करनेवाला हो।'

स्वार्थ और सर्वार्थ--इन दो शब्दों का उल्लेख करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'व्यक्ति स्वार्थी न बने। वह स्वार्थ से उपरत होकर सर्वार्थ चिंतन करे, दूसरों के हित का चिंतन करे। केवल स्वार्थ की भावना होगी तो पारिवारिक विघटन की स्थितियां पैदा हो सकती हैं। स्वार्थ भाव से मुक्त व्यक्ति परमार्थ की दिशा में गति कर सकता है।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी प्रेरक वक्तव्य हुआ। बेंगलुरु ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं तथा सुश्री हेमलता एवं सुश्री सोनल पीपाड़ा ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया।

विद्यालयों में पावन पाथेय

परमाराध्य आचार्यवर ने आज प्रातःकाल केलवा के दो विद्यालयों को अपने चरणयुगल से पावन कर विद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को पावन पाथेय प्रदान किया। आचार्यवर सर्वप्रथम राधिका बाल विद्या संस्थान में पधारे। प्रधानाध्यापक ने अपने सहयोगी शिक्षकों के साथ विद्यालय प्रांगण में पूज्य गुरुदेव का भावभीना स्वागत किया। छात्राओं द्वारा प्रस्तुत स्वागत गान के पश्चात् पूज्यप्रवर ने अपने पावन संबोधन में विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ सत्संस्कारों को भी विकसित करने हेतु प्रेरित किया।

इसके पश्चात आचार्यप्रवर आदर्श स्वस्तिक बाल निकेतन माध्यमिक विद्यालय में पधारे। अपने विद्यालय परिसर में आचार्यवर के पावन पदार्पण से उल्लसित श्री रतनलाल जोशी ने पूज्यवर के स्वागत में अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। पूज्यप्रवर ने यहां विद्यार्थियों को शिक्षार्जन के साथ संस्कारार्जन की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यवर की प्रेरणा से छात्र-छात्राओं ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

एक नाळ और है...

१३ अक्टूबर। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने आज से केलवा के घरों में चरणस्पर्श प्रारंभ किए। अपने आराध्य को अपने गृह-आंगन में पाकर श्रद्धालुओं में हर्षातिरेक होना स्वाभाविक था। चरण स्पर्श के क्रम में आचार्यवर एक घर में पधारे। गोचरी के पश्चात भाई ने निवेदन किया--'गुरुदेव! छोटे भाई का निवास प्रथम तल पर है।' करुणानिधान आचार्यवर तत्काल प्रथम तल पर पधार गए और पारिवारिकजनों को मंगलपाठ सुनाया। इतने में ही उस भाई के पिता आ गए। भाई ने निवेदन किया--'गुरुदेव ! पिताजी दूसरे तल पर रहते हैं, लेकिन आप।' युवक के पिता बोले--'प्रभो ! बस, एक नाळ (सीढ़ी) और है।'

आचार्यवर ने कहा--'एक नाळ ही तो और है, कोई बात नहीं'--फरमाते हुए आचार्यवर दूसरे तल पर भी पधार गए। आचार्यवर के अनुग्रहवृष्टि से अभिस्नात पूरा परिवार कृतकृत्य था।

वैराग्य से भावित रहे चित्त

आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में संबोधि पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में पूज्य आचार्यवर ने कहा--'पुद्‌गल आत्मा से भिन्न है--यह जानते हुए भी व्यक्ति पुद्‌गलों में अनुरक्त हो जाता है। इसका कारण है मोह और अवैराग्य। इनके कारण व्यक्ति विषयों को ग्रहण करता है, उसकी प्रवृत्ति बढ़ जाती है, मन चंचल हो जाता है और व्यक्ति पुद्‌गलों में अनुरक्त हो जाता है। बार-बार विषयों के चिंतन से भी मन पदार्थासक्त बन जाता है। साधक विषयों के चिंतन से दूर रहता हुआ अपने चित्त को वैराग्य से भावित रखे तो उसे सफलता प्राप्त हो सकती है।'

शासनश्री मुनि पानमलजी के ६६वें दीक्षा दिवस का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'शासनश्री मुनिश्री पानमलजी स्वामी हमारे धर्मसंघ के अच्छे संत हैं। इन्होंने धर्मसंघ की बहुत सेवा की है। भविष्य में भी सेवा करते रहें और धर्मसंघ की प्रभावना को बढ़ाते रहें।' इस अवसर पर आचार्यवर ने मुनिश्री के संदर्भ में स्वरचित पद्य भी फरमाया। वह इस प्रकार है--

छ्यासठवां दीक्षा दिवस, करें आत्मउत्थान।
शासन की सेवा करें, शासनश्री मुनि पान॥

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ। कांकरोली से समागत हरिता इंटरनेशनल के विद्यार्थियों ने गीत का संगान किया।

मध्याह्न में पूज्यवर के सान्निध्य में चातुर्मास व्यवस्था समिति केलवा द्वारा तपस्वियों के अभिनंदन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। ग्यारह मासखमण तथा अठाई और उससे अधिक तपस्या करने वाले लगभग १५० तपस्वियों को प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से अभिनंदनस्वरूप स्मृतिचिह्न प्रदान किए गए। मुनि प्रसन्नकुमारजी ने तप की अनुमोदना में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'जैन वाङ्मय में तप को आत्मा की उज्ज्वलता का महत्वपूर्ण साधन माना गया है। इस बार के चतुर्मास में वर्षा की जैसे झड़ी लगी रही, वैसे ही तपस्या की भी झड़ी लगी रही। यहां अनेक छोटी-बड़ी तपस्याएं संपन्न हुईं। सभी तपस्वी अपना आध्यात्मिक विकास करते रहें।'

१४ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने आगम मनीषी स्व. मुनि दुलहराजजी द्वारा हिन्दी में रूपान्तरित उपन्यास 'बन्धन टूटे' के संदर्भ में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी ने उपन्यास का नवीन संस्करण आचार्यवर को भेंट किया।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मोह का मूल कारण है--अवैराग्य। जब तक अवैराग्य की प्रधानता रहती है, तब तक व्यक्ति का चित्त भोगों में उलझा रहता है। यदि व्यक्ति राग से विराग की ओर, भोग से योग की ओर, मनोरंजन से आत्मरंजन की ओर तथा प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर प्रयाण करे तो उसका जीवन सुखमय बन सकता है।'

उपन्यास 'बंधन टूटे' के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'हमारे धर्मसंघ में कुछ मुनि ऐसे हुए हैं, जो विद्या के क्षेत्र में आगे बढ़े। इनमें एक नाम है आगम मनीषी मुनि दुलहराजजी स्वामी। उनका सौभाग्य था कि वे आचार्यश्री महाप्रज्ञ के साथ लम्बे समय तक जुड़े रहे। आगम कार्य में उनका बहुत योगदान है। वे विद्वान और शान्तस्वभावी संत थे। उन्हें बहुश्रुत परिषद का सदस्य भी मनोनीत किया गया। शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी विद्याप्रेमी संत हैं। इन्हें संस्कृत का अच्छा ज्ञान है, इनका विनयभाव प्रशस्त है। इन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ की बहुत सेवा की है। मुनि जितेन्द्रकुमारजी युवा, मेधावी और तार्किक संत हैं। हमने इन्हें गोचरी, बोझ आदि व्यवस्था संबंधी कार्यों से जोड़ रखा है। ये भी सेवा और समर्पण भावना से कार्य करते हैं।'

अन्तर्राष्ट्रीय सापेक्ष अर्थशास्त्र सेमिनार

१५ अक्टूबर। परम श्रद्धेय आचार्यवर की मंगल सन्निधि में आज से द्विदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सापेक्ष अर्थशास्त्र सेमिनार का शुभारंभ हुआ। प्रातःकालीन उद्‌घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे ताइवान के राजदूत वेन्चीओंग। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि महावीरकुमारजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कोठारी और सेमिनार के प्रायोजक श्री अरविन्द धाकड़ ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। ड्यूक यूनिवर्सिटी के कोआर्डिनेटर डायरेक्टर एवं आई. आई. एम. अहमदाबाद में प्रोफेसर के रूप में कार्यरत श्री शैलेन्द्र मेहता, श्री शान्तिलाल बरमेचा, प्रसन्ना बेंकटेश्वर एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री संजय पासवान ने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। मुनि अक्षयप्रकाशजी ने सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा पर अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी। सेमिनार के सहआयोजक मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपतिश्री आई. बी.त्रिवेदी ने सापेक्ष अर्थशास्त्र को अपने विश्वविद्यालय में बैचलर, मास्टर और डिप्लोमा सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम के रूप में लागू करने का संकल्प व्यक्त किया।

समारोह के मुख्य अतिथि ताइवान के राजदूत बेन्ची ओंग ने अपने अभिभाषण में कहा--'सापेक्ष अर्थशास्त्र आज बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह आवश्यक और उपयोगी भी है। आज सवेरे आचार्यश्री से मेरी ताइवान के विकास और समृद्धि के विषय में चर्चा हो रही थी। ताइवान आज से लगभग साठ वर्ष पूर्व चीन से अलग हुआ और अपनी स्वतंत्र अर्थनीति बनाई। इसमें सर्वाधिक महत्व शिक्षा को दिया गया। इसके बाद चिकित्सा और फिर कृषि को। उद्योग और अन्य विकास इसके बाद आते हैं। वहां छह से नौ वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क स्कूली शिक्षा अनिवार्य है। जो अभिभावक ऐसा नहीं करते, उन्हें दण्डित किया जाता है।' श्री वेन्चीओंग ने जैन और बौद्धों

को समकालीन बताते हुए दोनों सम्प्रदायों के बीच परस्पर संवाद और समन्वय स्थापित होने पर बहुत बड़े और अच्छे कार्य होने की आशा व्यक्त की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'अर्थ जीवन का बहुत बड़ा आधार माना जाता है। वस्त्र, आवास, शिक्षा, चिकित्सा आदि की पूर्ति अर्थ सापेक्ष होती है। भारतीय साहित्य में धर्म, अर्थ, काम इस त्रिवर्ग का उल्लेख मिलता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा प्रस्तुत की। जिस अर्थार्जन के स्रोत सही हों, वही वस्तुतः अर्थ है, अन्यथा वह अर्थाभास है।'

आचार्यवर ने सापेक्ष अर्थशास्त्र की उपयोगिता को रेखांकित करते हुए कहा--'अर्थार्जन में नैतिकता व प्रामाणिकता रहे। उपयोग में संयम व अनुकंपा का भाव हो। गुरुदेव तुलसी द्वारा अणुव्रत के माध्यम से प्रदत्त संयम और नैतिकता के संदेश व्यापक बन जाएं तो सापेक्ष अर्थशास्त्र सही मायने में सिद्ध हो सकता है। संतुलित व सुव्यवस्थित विकास के लिए सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा आवश्यक है। यह जीवन व्यवहार से जुड़ जाए तो सापेक्ष अर्थशास्त्र में समग्रता आ जाएगी।' कार्यक्रम का संचालन श्री बजरंग जैन ने किया।

लक्ष्य निर्धारित हो साधना का

१६ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में गंगापुर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। दर्शन- उपासना हेतु श्रीचरणों में उपस्थित अहमदाबाद थली युवा संघ की ओर से मंत्री श्री सुनील बोहरा ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। तेरापंथ कन्या मंडल आमेट की गीत प्रस्तुति के बाद सी.एन.वी.सी. आवाज व्यापार न्यूज चैनल के संपादक श्री संजय पुगलिया ने अपने विचार व्यक्त किए। तेयुप देवगढ़ की ओर से भरवाए गए नशामुक्ति के दो सौ फॉर्म पूज्यप्रवर को भेंट किए गए। मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में श्रावक समाज को धर्म की आराधना में सजग रहने की प्रेरणा दी।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि के पांचवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'साधक सर्वप्रथम अपनी साधना का लक्ष्य निर्धारित करे। इसके लिए वह स्वाध्याय और ध्यान में तल्लीन रहे। इससे उसका कर्म-मल धुलता रहेगा। यह साधना मन, वचन और शरीर--इन तीनों के योग से ही संभव हो सकती है। साधना का साधन शरीर है। इसे साधना के अनुरूप बनाए रखने के लिए आहार आदि की जरूरत रहती है। साधक अपने अधिकांश समय का नियोजन ध्यान व स्वाध्याय में करे।' पूज्यप्रवर ने नाम और ख्याति से उपरत होकर वीतरागता के विकास की प्रेरणा दी।

आज केलवा के धोळी बावड़ी मोहल्ले में पूज्य आचार्यवर का पावन पदार्पण हुआ। उस क्षेत्र के विभिन्न जाति व वर्गों की विशाल उपस्थिति में प्रदत्त अपने प्रेरक उद्‌बोधन में गुरुदेव ने नशे के दुष्परिणामों की चर्चा करते हुए लोगों से नशा छोड़ने का आह्वान किया तो लोगों पर इसका जादू का-सा असर हुआ। धूम्रपान के वर्षों से आदी लोगों के हाथ तत्काल अपनी जेबों में गए। एक-एक कर बीड़ी के बंडल और गुटखा, खैनी आदि के पैकेट निकलते गए और क्षण भर में ही उन टूटे हुए बंडलों और पैकेटों का वहां ढेर लग गया। लोग इस दृश्य को विस्मय से देखते रह गए।

अविचल हो आस्था

१७ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'व्यक्ति को धार्मिक होने का लाभ तभी प्राप्त हो सकता है, जब वह ग्रंथि से बचने का प्रयास करे, आसक्ति से बचे।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'देव, गुरु और धर्म के प्रति सबके मन में घनीभूत आस्था होनी चाहिए। इससे अध्यात्म के पथ पर आगे बढ़ने का पथ प्रशस्त होगा, कषाय का मंदीकरण होगा और वीतरागता का भाव पुष्ट हो सकेगा। श्रद्धा के दृढ़ीकरण से आत्मविश्वास वृद्धिंगत होता है। इससे व्यक्ति को जीवन में अनेक उपलब्धियां हासिल हो सकती हैं। श्रद्धा के द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। किसी भी स्थिति में व्यक्ति अपनी आस्था को अविचल बनाए रखे। इसके लिए अहिंसा की चेतना को जागृत किया जाए और संयम का अभ्यास किया जाए।'

आज मध्याह्न में उदयपुर संभाग के आई. जी. गोविन्दजी गुप्ता और राजसमन्द जिले के एस. पी. नितिनदीप ब्लग्गन श्रीचरणों में उपस्थित हुए और पूज्यवर से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

बालाजी धाम में तेरापंथ के श्रीराम

१८ अक्टूबर। आज प्रातः महाप्रज्ञ भवन से लगभग पांच किमी. का विहार कर पूज्य आचार्यप्रवर पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार बालाजी धाम उमराया पधारे। मार्ग में अनेक खदानों का स्पर्श करते हुए पूज्यप्रवर ने प्रवास व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष श्री परमेश्वर बोहरा के प्रतिष्ठान पी. जी. मार्बल में अल्पकालिक प्रवास किया। समस्त बोहरा परिवार पूज्यवर के इस अनुग्रह से आह्लादित था। बालाजी धाम पधारने पर चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष एवं विकास बालाजी मार्बल ग्रुप के निदेशक श्री महेन्द्र कोठारी व तेरापंथी सभा केलवा के अध्यक्ष श्री बाबूलाल कोठारी ने सपरिवार अपने राम का श्रद्धासिक्त स्वागत किया। कोठारी परिवार आराध्य को अपने आंगन में पाकर धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

बालाजी धाम के परिसर में स्थित मोहन-कन्हैया प्रांगण में आयोजित प्रातःकालीन स्वागत कार्यक्रम में बालिका प्रियांशी कोठारी ने अपनी श्रद्धासिक्त भावनाएं व्यक्त की। कोठारी परिवार की बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया। श्री बाबूलालजी एवं श्री महेन्द्र कोठारी ने समागत अतिथियों का स्वागत करते हुए धाम में पधारने के लिए पूज्यप्रवर के प्रति भावभीनी कृतज्ञता व्यक्त की। पूज्यवर के सम्मान में सनातन वैदिक संस्थान द्वारा पं. उमेशजी द्विवेदी के नेतृत्व में चारों वेदों की चयनित ऋचाओं का उच्चारण किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित द्वारकाधीश मन्दिर कांकरोली के तृतीय गादीपति श्री बृजेशजी महाराज ने अपने वक्तव्य में कहा--'अलग-अलग धर्मों के अलग-अलग सिद्धान्त हैं। विचारों में भिन्नता हो सकती है, किन्तु मूलभूत सिद्धान्तों में कोई अन्तर नहीं है। जैन धर्म के सिद्धान्त भारतीय संस्कृति में बहुत मूल्यवान हैं। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन धर्म के सिद्धान्तों को प्रचारित और प्रसारित करने में प्रमुख भूमिका निभाई। विभिन्न सम्प्रदायों के बीच समन्वय और सौहार्द स्थापित करने में भी उनका अमूल्य योगदान रहा। आचार्य महाश्रमण उनके कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। धर्म के मूल सिद्धान्तों को अगर आत्मसात कर लिया जाए तो आत्मा का साक्षात्कार किया जा सकता है।'

बांसवाड़ा से समागत महर्षि उत्तम स्वामीजी ने कहा--'जीवन संयमित होने से आत्मानुभूति की जा सकती है। संयम, सहजता व निरहंकारिता की स्थिति में हम समस्याओं का समाधान खोज सकते हैं।' कार्यक्रम में मुनि दिनेशकुमारजी एवं मुनि कुमारश्रमणजी ने भी अपने प्रेरक विचार व्यक्त किए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'भक्ति भी साधना का एक प्रयोग है। भगवान की भक्ति करना अच्छा है, किन्तु उसके साथ आचरण भी पवित्र रहे। राम नाम परमात्मा का प्रतीक बना हुआ है। यदि भीतर के विकार दूर हो जाएं तो राम नाम को जपना ज्यादा सार्थक हो सकेगा। संसार में हनुमानजी की अपनी गौरव गाथा है। जैन मंतव्य में भी हनुमानजी को परमात्मस्वरूप माना गया है। बल के लिए हनुमानजी को आलम्बन के रूप में माना जा सकता है। भक्ति का कोई फल निकले तो जीवन धन्य बन जाता है। व्यक्ति अपनी शक्ति को पहचाने, उसे उद्घाटित करे और उसका उपयोग पवित्र कार्यों में करे।' इस अवसर पर पूज्यवर ने रामायण के अनेक रोचक प्रसंगों को भी सरस शैली में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री ओम आचार्य ने किया।

आज रात्रि में भक्ति संगीत संध्या का उपक्रम रहा, जिसमें श्रद्धानिष्ठ संगायक कमल सेठिया, हेमलता एवं सोनल पीपाड़ा आदि संगायकों ने सुमधुर प्रस्तुतियां दीं। पूज्यप्रवर के इस एकदिवसीय प्रवास में उमराया तथा आसपास के गावों से लोगों का सैलाब उमड़ पड़ा। पूज्य आचार्यवर के उपदेश से प्रेरित होकर अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

आग्रहपूर्ण अनुरोध : अनुकंपापूर्ण अनुग्रह

१६ अक्टूबर। परमाराध्य आचार्यवर आज प्रातः बालाजी धाम से चातुर्मासिक प्रवास स्थल महाप्रज्ञ भवन की ओर प्रस्थित हुए। किन्तु आचार्यवर ज्यों ही बालाजी धाम के मुख्य द्वार तक पधारे, सुभाष कोठारी नामक श्रद्धालु भाई अपनी २.२ किमी. दूर स्थित माइन्स पर पधारने हेतु आग्रहपूर्ण प्रार्थना करने लगा। भक्तवत्सल आचार्यप्रवर ने कुछ क्षण चिंतन करने के पश्चात उसकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और उस ओर मुड़ गए। मार्गवर्ती उमटी गांव के लोगों को पूज्यवर के आगमन की सूचना मिली तो उनकी प्रसन्नता मुखर हो उठी। कुछ ही देर में ग्रामीणों की टोलियां पूज्यप्रवर के स्वागत में उमड़ पड़ीं। आरती के थाल सजाकर ढोल आदि पारंपरिक वाद्यों के साथ ग्रामवासियों ने पूज्यवर की अगवानी की। गांव के मन्दिर परिसर में पूज्य आचार्यवर ने ग्रामीणों को संबोधित किया। आचार्यवर

की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। पूरे गांव में हर्ष और उल्लास का वातावरण रहा।

वहां से आचार्यवर सुभाषजी की माइन्स पर पधारे। श्री रोशनलालजी सांखला और लक्की कोठारी ने आचार्यवर से निवेदन किया--'गुरुदेव! अब यहां से हमारी माइन्स ज्यादा दूर नहीं है। आप कृपा कराएं।' पूज्यवर द्वारा दूरी पूछने पर उन्होंने कहा--'अधिकतम ढाई किलोमीटर।' करुणानिधान आचार्यवर के चरण उनकी माइन्स की ओर मुड़ गए। परन्तु यह पथ सामान्य सड़क मार्ग नहीं था। उतार-चढ़ाओं से युक्त ऊबड़-खाबड़ और नुकीले पत्थरों के साथ सूक्ष्म चिकनी धूल से परिपूर्ण, फिर भी करुणामूर्ति आचार्यवर के चरणों को रोक पाने में पूर्णतया असमर्थ। मार्ग के दोनों ओर मार्बल की पाताल जैसी गहरी खदानें और उनमें खुदाई करने वाली मशीनों का कर्कश शोर, क्रेनों के द्वारा उठाए जा रहे विशाल प्रस्तर-खण्ड, जिन्हें देखकर मन में सिहरन-सी होती कि क्रेन की चंगुल से कहीं छूट जाए तो क्या हो? पूज्यवर जब दोनों श्रद्धालुओं की माइन्स पर पधारे तो वह दूरी उनके द्वारा बताई गई दूरी से लगभग दूनी हो गई थी।

आचार्यवर पुनः बालाजी धाम की ओर प्रस्थित हो गए। चिलचिलाती धूप में दुरूह पथ से तेरह किमी. का विहार कर लगभग दस बजे महातपस्वी आचार्यवर पुनः बालाजी धाम पधारे। अब तक आपने पानी भी ग्रहण नहीं किया था। तनुरत्न श्रम के स्वेद बिन्दुओं से तरबतर था और चरणयुगल श्वेत रजकणों को आश्रय दिए हुए था। कुछ क्षण विश्राम के बाद पूज्यवर ने चिंतनपूर्वक फरमाया--'निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हमें आज पुनः महाप्रज्ञ भवन पहुंचना था, किन्तु अब और पांच किमी. चलने की अपेक्षा क्यों न आज यहीं विश्राम कर लें।' आचार्यवर ने अपने इस निर्णय की अवगति लिखित पत्र द्वारा साध्वीप्रमुखा और मंत्री मुनि को प्रेषित कर दी। पूज्यवर ने आज का प्रवास बालाजी धाम के पार्श्व में स्थित श्री भैरूंलालजी बोहरा के ऑफिस में निर्धारित किया। पूज्यवर जब बोहराजी की ऑफिस में पधारे, तब वहां परिवार का कोई सदस्य उपस्थित नहीं था। सहसा पूज्यवर के पदार्पण और वहां प्रवास की सूचना पाकर बोहरा परिवार की प्रसन्नता का पार न रहा। इस अयाचित कृपादृष्टि से बोहरा परिवार का हर सदस्य रोमांचित और श्रद्धा से प्रणत था।

बालाजी धाम से सीधा महाप्रज्ञ भवन पहुंचे अनेक संतों को जब आचार्यप्रवर के प्रवास की जानकारी हुई तो उन्होंने पुनः श्रीचरणों में पहुंचने की अनुमति चाही। आचार्यवर ने उनके लिए वात्सल्यपूर्ण शब्दों में फरमाया--'धूप कड़ी है, अब वे वापस क्यों आएं? अन्ततः पूज्यप्रवर को संतों की बलवती प्रार्थना स्वीकृत करनी पड़ी। स्वीकृति प्राप्त कर मुनि ऋषभकुमारजी आदि पांच संत पूज्यवर के प्रवास की दिशा में प्रस्थित हो गए। इस संपूर्ण वृत्तान्त को आचार्यवर ने एक पद्य में निबद्ध किया। वह इस प्रकार है--

साधु-साध्वियों साथ हम, आए बाला धाम।
एक दिवस ज्यादा लगा, 'खनि' परसन के नाम॥
अनायास मौका मिला, भैरूंजी को आज।
संत लौटकर आ रहे, प्रमुदित 'खान' समाज॥

श्रद्धालुओं का आग्रहपूर्ण अनुरोध और पूज्यवर का अनुकंपापूर्ण अनुग्रह तथा कल बालाजी और आज भैरूंजी (भैरूंलालजी बोहरा) के यहां प्रवास जन-जन के मुख पर चर्चा का विषय रहा। पूज्यवर के साथ यात्रा कर पहुंचे छह संत और नवागंतुक पांच संत--इस प्रकार ग्यारह मुनियों को आज गुरु सन्निधि का सुअवसर प्राप्त हुआ।

जैन विद्या कार्यशाला

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद एवं समण संस्कृति संकाय जैविभा द्वारा देश के विभिन्न प्रान्तों के ५५ क्षेत्रों में १-२० अगस्त तक जैनविद्या कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला के तीन हजार संभागियों में से १०५० ने परीक्षा में भाग लिया, जिसमें ७२७ परीक्षार्थी उत्तीर्ण रहे। परिणाम ६६ प्रतिशत रहा। पूरे देश में प्रथम श्री महेन्द्र सेठिया (चेन्नई), द्वितीय स्थान पर पूजा ओस्तवाल (बालोतरा) व तृतीय स्थान पर खुशबू ललवानी (नोखा), विजयश्री मरोठी (नोखा), मनीष छाजेड़ (बाडमेर), नीलम भंसाली (पाली), रेखा बरड़िया (पाली) रहे। कार्यशाला के पर्यवेक्षक व समन्वयक श्री नीलेश बैद थे। कार्यशाला के परीक्षा परिणाम पर उपलब्ध है।

मासखमण तपस्याएं

- पेटलावद में साध्वी सरोजकुमारीजी की सन्निधि में श्रीमती सोनादेवी कोटड़िया, श्रीमती कमलादेवी बोथरा एवं श्रीमती विनीतादेवी दूगड़ ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- दलकोला (प.बं.) में साध्वी त्रिशलाकुमारीजी की सन्निधि में श्रीमती राखीदेवी लोढ़ा ने मासखमण तप किया है।
- रतनगढ़ में साध्वी जयप्रभाजी की सन्निधि में श्री छतरसिंह बैद ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- जयपुर में मुनि कुलदीपकुमारजी की सन्निधि में श्रीमती स्मितादेवी बोथरा ने मासखमण तप किया है।
- लुधियाना में मुनि धर्मचन्दजी'पीयूष' की सन्निधि में श्रीमती पिंकीदेवी सुराणा ने मासखमण तप किया है।
- चेन्नई में साध्वी कीर्तिलताजी की सन्निधि में श्रीमती विमलादेवी मांडोत ने ३५ दिन एवं श्रीमती सपना आनन्द दूगड़ ने मासखमण तप किया है।
- केसिंगा में साध्वी कुन्दनरेखाजी की सन्निधि में श्रीमती रामकलीदेवी जैन ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- जाखलमंडी में मुनि कमलकुमारजी की सन्निधि में श्रीमती राजरानी जैन एवं श्रीमती प्रकाशदेवी जैन ने ७२ दिनों की तपस्या संपन्न की है।
- उदयपुर में साध्वी कनकरेखाजी की सन्निधि में श्रीमती सुशीलादेवी बरड़िया ने मासखमण तप किया है।
- मुम्बई में साध्वी अशोकश्रीजी की सन्निधि में श्री महेन्द्रकुमार डागलिया ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- बेंगलुरु में साध्वी संगीतश्रीजी की सन्निधि में श्री लक्ष्मीलाल गांधी एवं श्रीमती मोहनीदेवी बैद ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- हुबली (कर्नाटक) में समणी कंचनप्रज्ञाजी के सान्निध्य में श्रीमती शान्तादेवी पालगोता ने ५१ दिन की तथा सुश्री मोनिका भंसाली एवं श्री मुकेश चोपड़ा ने मासखमण की तपस्या संपन्न की है।
- तिरुकलीकुन्द्रम में समणी ज्योतिप्रज्ञाजी के सान्निध्य में श्रीमती विमलादेवी दूगड़ ने मासखमण तप किया है।

स्मृति-संबल

- उदयपुर निवासी श्रीमती रतनीदेवी मुर्डिया (धर्मपत्नी-श्री जोधसिंह मुर्डिया) का इक्कीस दिन के चौविहार संलेखना-संथारे में स्वर्गवास हो गया। वह श्रद्धानिष्ठ और भक्तिमान श्राविका थी। चार अठाई और नौ आदि की कई तपस्याएं की। लंबे समय तक उनके अस्वास्थ्य की समस्या रही। अस्पताल से घर आकर उन्होंने वसीयतनामा लिखवाया और तीन दिन बाद स्वयं ही चौविहार का प्रत्याख्यान कर दिया। वहां प्रवासित साध्वियों ने दर्शन दिए और परिणामधारा को प्रवर्द्धमान रखने में सहयोग दिया। नौ दिन की संलेखना-तपस्या में आचार्यवर के निर्देशानुसार साध्वी कनकरेखाजी ने पारिवारिकजनों और समाज के लोगों के बीच उन्हें संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। उनके संथारे से अच्छा आध्यात्मिक वातावरण बना और संघ की अच्छी प्रभावना हुई।
- श्रीडूंगरगढ़ निवासी श्रीमती मनोहरीदेवी मालू (धर्मपत्नी-श्री फूसराजजी मालू) का संथारे में स्वर्गवास हो गया। वे साध्वी कल्पयशाजी, साध्वी जीतयशाजी व साध्वी सुविधिप्रभाजी की संसारपक्षीया दादीजी थीं। बाल्यावस्था से ही उन्हें जमीकन्द, रात्रि भोजन व कच्चे पानी के त्याग के साथ सामायिक, प्रवचन श्रवण व संतदर्शन का नित्यक्रम था। ग्यारह तक की लड़ी आदि कई तपस्याएं करनेवाली श्रीमती मालू लंबे समय तक गुरु उपासना में संलग्न रहीं। सोलह दिन की संलेखना में ५ सितम्बर को पूज्य आचार्यवर के निर्देशानुसार साध्वी अणिमाश्रीजी व साध्वी मंगलप्रज्ञाजी से तिविहार एवं १९ सितम्बर को चौविहार संथारा स्वीकार किया। २२ सितम्बर को बढ़ते-चढ़ते परिणामों के साथ समाधिमरण का वरण कर अपने जीवन को कृतार्थ कर लिया। उनके संथारे से धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई।
- उदययपुर निवासी श्री अभय करणपुरिया, श्री पुनीत करणपुरिया एवं श्रीमती कंचनदेवी करणपुरिया का सड़क दुर्घटना में देहावसान हो गया। करणपुरिया परिवार उदयपुर का श्रद्धालु परिवार है। वियोग की स्थिति को परिवारजनों ने समभाव से सहन किया।
- मेड़ता निवासी चेन्नई प्रवासी श्री पन्नालाल सिंघवी का देहान्त हो गया। उनके अग्रज गुलाबचन्दजी सिंघवी वर्षों से केन्द्र की लम्बी उपासना करने वाले सेवाभावी श्रावक हैं। मेड़ता का सिंघवी परिवार धार्मिक विचारों से संपन्न परिवार है।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/09-11 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

- लाडनूं निवासी श्री सुमेरमलजी मुणोत का स्वर्गवास हो गया। वे सहज, सरल, मृदुभाषी और धार्मिक विचारों के श्रावक थे। लाडनूं की अनेक सामाजिक और शैक्षणिक संस्थाओं से सक्रियता से संपृक्त थे। के. बी. उच्च प्राथमिक विद्यालय के व्यवस्थापक थे। उनके पुत्र दिल्ली के अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता हैं।
- कुआंरिया निवासी बड़ोदरा प्रवासी श्री मनोहरलाल बड़ोला का देहावसान हो गया। निधन से छह दिन पूर्व पूज्यप्रवर ने उन्हें 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन से संबोधित किया था। वे पिछले अट्ठाईस वर्षों से निरंतर लंबे समय तक केन्द्र की उपासना करते आ रहे थे। इस वर्ष भी केलवा में सेवारत थे। अचानक अस्वास्थ्य की समस्या हुई। उदयपुर में चिकित्सा कराने के बाद बड़ोदरा पहुंचे और वहीं उनका स्वर्गवास हो गया। उनका पूरा परिवार श्रद्धालु और सेवाभावी है।
- तोषाम निवासी दिल्ली प्रवासी श्री मदनलाल जैन का स्वर्गवास हो गया। हरियाणा के शिक्षा विभाग में प्राध्यापक, प्रधानाध्यापक और खंड शिक्षाधिकारी के रूप में उन्होंने लंबे समय तक अपनी सेवाएं दीं। वे अणुव्रती थे और नैतिक तथा प्रामाणिक व्यक्ति के रूप में उन्होंने अपनी विशिष्ट पहचान निर्मित की। सेवानिवृत्ति के बाद तुलसी अध्यात्म नीडम में निदेशक के रूप में बारह वर्ष तक अपनी सेवाएं दीं। प्रेक्षाध्यान के साधक, प्रेक्षा प्रशिक्षक और प्रेक्षा पुरस्कार से सम्मानित श्रद्धानिष्ठ मदनकुमारजी संघ और संघपति के प्रति गहरी निष्ठा रखते थे।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

२५००/- नये शोरूम 'आनन्द लाइट्स' के उद्घाटन के उपलक्ष्य में श्री लालचन्द आनंदकुमार अतिश्री बेंगानी, बीदासर-गुवाहाटी द्वारा प्रदत्त

२१००/- श्री हनुमानमलजी-झनकारदेवी धाड़ेवा (मोमासर) के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती) के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू नरेन्द्र-नेहा, नवीन-नीतू, सुपौत्र एवं सुपौत्री हर्ष, जया, कार्तिक्य धाड़ेवा लुधियाना द्वारा प्रदत्त।

२१००/- नूतन गृह-प्रवेश के उपलक्ष्य में श्री हनुमानमल रेशमीदेवी सेठिया (सुपुत्र व पुत्रवधू-स्व. शेरमलजी धन्नीदेवी सेठिया, श्रीडूंगरगढ़) संजय-पिंकी, सिद्धार्थ, आयुष सेठिया, रायबरेली (उ.प्र.) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री घमंडीरामजी बोथरा (श्रीडूंगरगढ़-कोलकाता) के जीवन के ७५ वर्ष की सानंद परिसंपन्नता के उपलक्ष्य में श्रीमती जतनदेवी, सुरेन्द्र, सुधा, गौरव, प्रियदर्शिनी, खुशबू बोथरा एवं मधु-प्रताप, विकास बांठिया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व.श्री भंवरलालजी छाजेड़ (सुपुत्र-स्व. किस्तूरचन्दजी छाजेड़, आडसर) की २५वीं पुण्यतिथि (३० अक्टूबर) पर छाजेड़ परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती घेवरीदेवी भंसाली (धर्मपत्नी-श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. नवरतनमलजी भंसाली, सुजानगढ़) के प्रभावक संथारे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र बच्छराज, कमलसिंह, अमरसिंह, रेवंतमल, महेन्द्रकुमार, राकेशकुमार भंसाली, मुम्बई-बेंगलुरु-दिल्ली द्वारा प्रदत्त।

- विज्ञप्ति के सदस्यों से निवेदन है कि पता परिवर्तित कराते समय अथवा विज्ञप्ति के संदर्भ में किसी भी प्रकार की कम्प्लेंट करते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें। इससे त्वरित कार्यवाही में सुविधा रहती है। ग्राहक संख्या विज्ञप्ति के लिफाफे पर नाम और पते के पहले अंकित होती है।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता है

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति

पो. केलवा-३१३ ३३४, जि. राजसमन्द (राजस्थान) फोन : ०९६८००५५३८१, ०९३५२४०४६४१

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**

WWW.TERAPANTHINFO.COM
WWW.JSTMAHASABHA.ORG